GIRLS' HIGH SCHOOL & COLLEGE, PRAYAGRAJ
SESSION - 2020 - 2021
CLASS - XI A.B.C.D.
SUB. - HINDI
WORKSHEET No. - 04

निर्देश :- अभिभावकों से ये अपेक्षा की जाती है कि वे ये सुनिश्चित करें कि छात्रा दी गई विषयवस्तु का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तत्पश्चात् दिए गए प्रश्नों का निर्देशानुसार उत्तर दे।

नोट :- पाठ्यपुस्तक : (गद्य) गद्य संकलन
(ISC Collection of short Stories & Essays)
एवरग्रीन पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड
(2) व्याकरण - आई.एस.सी. हिन्दी व्याकरण मंजूषा

प्रथम पाठ - 'पुत्र-प्रेम'
लेखक - प्रेमचंद

संकेत :- हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार तथा उपन्यास सम्राट प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'पुत्र-प्रेम' यथार्थ के धरातल पर आधारित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में चैतन्यदास को एक आत्मकेन्द्रित पिता के रूप में दिखाया है जो पेशे से वकील और अर्थशास्त्र के ज्ञाता हैं। उनके दो पुत्र थे बड़ा प्रभुदास एवं छोटा शिवदास। दोनों ही चतुर एवं होनहार थे। उन्हें अपने बड़े बेटे प्रभुदास से विशेष प्यार था तथा उससे बहुत अपेक्षाएं भी थी। प्रभुदास के बीमार पड़ने पर उनके विचार बदल जाते हैं। वह एक स्वार्थी व हृदयहीन पिता के रूप में दिखाई देते हैं। इस कहानी में लेखक ने पिता की अपने पुत्रों से अपेक्षाओं का वर्णन किया गया है। बीमारी के कारण बड़ा बेटा प्रभुदास प्रभु को प्यारा हो जाता है तब अन्त्येष्टि क्रिया के समय चैतन्यदास पर पुत्र-प्रेम हावी हो जाता है। वह आत्मग्लानि से भर जाते हैं कि अपने बेटे को बचाने का प्रयास नहीं

Scanned with CamScanner

किया। यहाँ एक लाचार व दुःखी पिता के रूप में चैतन्यदास ने पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ा है।

प्रेमचंद ने 'पुत्र-प्रेम' कहानी में पुरातनता व आधुनिकता दोनों का समावेश किया है। प्रेमचंद ने बड़ी स्पष्टता से तत्कालीन समाज के गुण-दोषों पर प्रकाश डाला है। समाज में व्याप्त लोभ व स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ पर चलने का संदेश भी कहानी में दिया है। कहानी के अंत में लेखक ने एक ऐसे पुत्र को दर्शाया है जो जी-जान से अपने बीमार पिता की सेवा करता है और उनके इलाज में पैसा पानी की तरह बहाता है। इतना ही नहीं वह अपना घर, जमीन का कुछ हिस्सा तक बेच देता है। इस प्रकार लेखक ने यहाँ पर आदर्श की स्थापना की है। कहानी के अंत में लेखक ने चैतन्यदास के विचारों में परिवर्तन दिखाकर कहानी को सुखान्त बना दिया है। लेखक ने मानवीय अन्तर्द्वन्द्व व संवेदना को सफलतापूर्वक उद्घाटित किया है।

प्रश्न-1 अधोलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"तो ईश्वर की इच्छा। आपको तसकीन हो जाएगी कि इसके लिए मैं जो कर सकता था, कर दिया।"

(i) उपर्युक्त कथन किसने, किससे कहा? अवतरण के लेखक का नाम भी लिखिए।

(ii) वक्ता ने यह वाक्य श्रोता के किस प्रश्न के उत्तर में कहा?

Scanned with CamScanner

(iii) 'तो ईश्वर की इच्छा' - से वक्ता का क्या आशय था ?

(iv) 'पुत्र - प्रेम' कहानी द्वारा लेखक ने क्या संदेश दिया है ?

प्रश्न :- 2. अधोलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" डॉक्टर ने कहा — " अब केवल एक ही साधन है। इन्हें इटली के किसी सेनेटोरियम में भेज देना चाहिए।" चैतन्यदास ने सजग होकर पूछा - "कितना खर्च होगा ?"

(i) बनारस के किस घाट पर प्रभुदास की चिता जल रही थी ? चैतन्यदास के हृदय में किसके प्रति प्रेम उमड़ रहा था ?

(ii) चैतन्यदास के कितने पुत्र थे ? वे उन पर खर्च के बदले क्या पाना चाहते थे ?

(iii) शिवदास को उन्होंने कहाँ पढ़ने भेजा ? चैतन्यदास की मनोवृत्ति अर्थशास्त्र पढ़ने के कारण किस प्रकार की हो गई थी ?

(iv) 'पुत्र - प्रेम' कहानी के अंत में चैतन्यदास ने अपने दुःखी मन को शांत करने के लिए क्या उपाय किया ?

प्रश्न - 3 अधोलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" हाँ, और लोग पीछे आ रहे हैं। कई सौ आदमी साथ आए हैं। यहाँ तक आने में सैकड़ों उठ गए

Scanned with CamScanner

पर सोचता हूँ कि बूढ़े पिता की मुक्ति तो बन गई। धन और है ही किसालिए।"

(i) उपर्युक्त कथन किस पाठ से लिया गया है? इस कथन का वक्ता कौन है? यह कथन किस स्थान पर कहा जा रहा है?

(ii) वक्ता द्वारा यह कथन किस सन्दर्भ में कहा गया था?

(iii) "धन और है ही किसालिए" वक्ता ऐसा क्यों कहता है?

(iv) वक्ता के सम्बन्ध में श्रोता को क्या-क्या पता चलता है? उसका प्रभाव श्रोता पर क्या पड़ता है? अन्ततः श्रोता क्या निर्णय लेता है?

विस्तृत प्रश्न :-

प्रश्न - 1 - 'पुत्र - प्रेम' कहानी के लेखक का संक्षेप में जीवन व साहित्यिक परिचय लिखिए।

प्रश्न - 2 - "मैं केवल भावुकता के फेर में पड़कर धन का ह्रास नहीं कर सकता" - कथन के आधार पर बाबू चैतन्यदास का चरित्र-चित्रण लिखिए।

प्रश्न - 3 'पुत्र - प्रेम' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न - 4 "पुत्र - प्रेम' कहानी का कथानक संक्षेप में लिखते हुए पाठ का उद्देश्य भी स्पष्ट कीजिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - 5 - कालबली के सामने मनुष्य का कोई बस नहीं चलता। पिता द्वारा पुत्र को बचाने के उपाय और पुत्र द्वारा पिता को बचाने के उपायों में किसका त्याग बड़ा था ? किसके मन में शांति थी और किसलिए ? समझाकर लिखिए।

व्याकरण

प्रश्न - 1 - निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :-

(i) राजा दो सौ रुपये दान देता है।
(ii) वर्षा का होना बादलों पर निर्भर रहता है।
(iii) मेरा राम के साथ घोर संबंध रहा है।
(iv) मैंने अपना इस्तीफ़ा कर दिया।
(v) वह शाम के पहले नहीं आएगा।
(vi) नियमित रूप से व्यायाम करने से शरीर निरोग रहता है।

प्रश्न - 2 - निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ समझकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(i) धूप में बाल सफेद करना।
(ii) कंगाली में आटा गीला होना।
(iii) राई का पहाड़ बनाना।
(iv) अन्धे की लकड़ी।
(v) दाल न गलना।
(vi) धक्के छूटना।

— END —

Scanned with CamScanner